खेद कैसे प्रकट करें
(21:40-22:29)

खेद प्रकट करने के बारे में विचार करते हुए मुझे अपने भाई कोय के साथ बचपन में छोटी-छोटी बातों पर लड़ना याद आता है। जब हमारी लड़ाई गालियों तक पहुंच जाती, तो मां को हस्तक्षेप करना पड़ता। वह हमें एक दूसरे के सामने खड़ा करके यह आज्ञा देती कि, ''क्षमा मांगो।'' पैर घसीटते हुए हम एक दूसरे की ओर देखे बिना इधर-उधर देखते हुए बुदबुदाते हुए यह कहते कि, ''क्षमा कर दो।'' कई बार मां हमें हाथ मिलाने को भी कह देती थी। यदि हम हिचकिचाते तो रोबदार ढंग से आज्ञा मिलती कि *''अब गले मिलो!''* हम संकोचपूर्ण एक दूसरे की ओर झुकते व न चाहते हुए भी एक दूसरे को अपनी बाहों में लेते और थोड़ा सा आलिंगन भी करते। फिर, वह या मैं भी हीं-हीं करने लगता और सब कुछ फिर से ठीक-ठाक हो जाता।

दुर्भाग्यवश, हममें से कई खेद प्रकट करने के लिए बुदबुदाते हुए ''क्षमा कर दो'' कहने से कभी आगे नहीं बढ़ते। कइयों में तो इतने आसान शब्द कहने का गुण भी नहीं है। कई बार, हमारा खेद प्रकट करना उस छोटे लड़के जैसा होता है जिसे कहा गया था कि जब तक वह अपनी बहन से क्षमा नहीं मांगता, उसे खाने के बाद आइसक्रीम नहीं मिलेगी। कुछ देर बुड़बुड़ाने के बाद, अपनी बहन को देखकर वह बिना सोचे समझे कहने लगा: ''मैंने तुझे कहा था कि जाकर नदी में कूद जा। सो ... मत कूदना!''

यह पाठ यह बताने के लिए नहीं है कि ऐसा खेद कैसे प्रकट किया जाए, चाहे यह कितना ही आवश्यक हो। बल्कि, हम बात करना चाहते हैं कि *बाइबल* ''खेद प्रकट करने'' को क्या कहती है। प्रेरितों 22:1 में पौलुस ने कहा, ''हे भाइयो, और पितरो, मेरा प्रत्युत्तर सुनो, जो मैं अब तुम्हारे साम्हने कहता हूं।'' अनुवादित शब्द ''प्रत्युत्तर'' के लिए यूनानी शब्द *अपोलोजिया* है,[1] जिससे अंग्रेज़ी का शब्द ''अपोलोजी'' निकला। परन्तु, यह ''अपोलोजी'' न तो गलती को मानना है और न ही क्षमा के लिए अपील है, बल्कि यह वह है जो पतरस के मन में था कि ''जो कोई तुमसे तुम्हारी आशा के विषय में कुछ पूछे, तो उसे उत्तर देने के लिए सर्वदा तैयार रहो, ...'' (1 पतरस 3:15)।[2] प्रेरितों के काम में *अपोलोजिया* आठ बार मिलता है, और उनमें से सात बार यह 22-26 अध्यायों में मिलता है,[3] जहां पौलुस ने यहूदियों और रोमियों दोनों के सामने बार-बार अपना पक्ष रखा।[4] पौलुस की पहली अपोलोजी अर्थात खेद प्रकट करने या प्रत्युत्तर का अध्ययन करने के बाद हम अविश्वासी जगत के सामने अपनी अपोलोजी के बारे में प्रासंगिकता बनाएंगे।

पौलुस का खेद प्रकट करना

पिछले पाठ के अन्त में हमने पढ़ा था कि पौलुस को मन्दिर में क्रुद्ध भीड़ से रोमी सेनाओं के स्थानीय सेनापति ने बचाया था। जब पौलुस को अन्टोनियो के किले में ले जाना था, [5] उसके कुछ समय पहले उसने अधिकारी से बात की: ''मैं तुझ से बिनती करता हूं, कि मुझे लोगों से बातें करने दे'' (21:39ख)। यदि मुझे इतना मारा गया होता कि मैं मरने वाला हो जाता, तो मैं कहता, ''मुझे यहां से ले चलो! मैं अब इस भीड़ से निकलना चाहता हूं!'' परन्तु पौलुस ने कहा, ''मुझे उनसे बातें करने दो।''[6] सेनापति ने उसे बात करने की अनुमति दे दी (21:40क) शायद इसलिए कि उसे लगता था कि इससे उसे पता चल जाएगा कि उत्पात क्यों मचा था।

यहूदियों के सामने उसका प्रत्युत्तर (21:40-22:3)

मैं पौलुस को ऊपर की सीढ़ी पर खड़ा देखने की कल्पना कर सकता हूं, सिपाही उसके और नीचे खड़ी भीड़ के बीच हैं। उसके फटे कपड़े धूल और लहू से भरे पड़े हैं, उसके चेहरे पर घाव और चोटें दिखाई देती हैं। फिर भी, उनका ध्यान आकर्षित करने के लिए हाथ उठाते समय उसमें ईश्वरीय चमक थी:

> तो पौलुस ने सीढ़ी पर खड़े होकर लोगों को हाथ से सैन किया:[7] जब वे चुप हो गए, तो वह इब्रानी भाषा में बोलने लगा,[8] कि, हे भाइयो, और पितरो, मेरा प्रत्युत्तर सुनो, जो मैं अब तुम्हारे साम्हने कहता हूं।[9]
>
> वे यह सुनकर कि वह हम से इब्रानी भाषा में बोलता है, और भी चुप रहे (21:40ख-22:2क)।

पौलुस ने सेनापति के साथ यूनानी भाषा में बात की थी (21:37) जबकि अपने साथी यहूदियों के साथ उनकी स्थानीय भाषा में।[10] उन्हें ''हे भाइयो,[11] और पितरो'' कहकर उसने एक परिवार के रूप में मान लिया। पौलुस ने अपने सुनने वालों के साथ अपनी पहचान करवाकर अपना प्रत्युत्तर आरम्भ किया।

वह चाहता था कि उन्हें पता चल जाए कि *वह उन्हें समझता है।*[12] उनकी तरह ही उसका पालन-पोषण व्यवस्था का सम्मान करने के लिए हुआ था। बीस वर्षों से अधिक समय तक वह यरूशलेम में नहीं रहा था और बहुत से लोग उसे व्यक्तिगत तौर पर नहीं जानते थे, इसलिए उसने अपने यहूदी होने की पृष्ठभूमि बताई। ''मैं तो यहूदी मनुष्य हूं'' उसने कहा, ''जो किलिकिया के तरसुस में जन्मा'' (22:3क)।[13] उसने अपने सुनने वालों को आश्वस्त किया कि तरसुस में जन्म लेने का यह अर्थ नहीं था कि उसकी मानसिकता मूर्तिपूजकों वाली थी! उसका पालन-पोषण यरूशलेम में हुआ था (22:3ख)। उस नगर में उसे ''गमलीएल के पांवों के पास[14] बैठकर पढ़ाया गया, और [उनके] बापदादों की

व्यवस्था की ठीक रीति पर सिखाया गया'' (22:3ग)। गमलीएल, जिसकी मृत्यु केवल पांच वर्ष पहले हुई थी, को सबसे महान रब्बियों में से एक माना जाता था।[15] पौलुस की धार्मिक सिफारिशों में कोई कमी नहीं हो सकती थी।

यद्यपि पौलुस ने अपने ऊपर लगाए गए आरोपों की प्रत्यक्ष बात नहीं की, परन्तु उसने दिखाया कि वास्तव में उनका कोई आधार नहीं था। पौलुस पर दो आरोप लगाए गए थे। (1) उसने प्रचार में यहूदी लोगों के विरुद्ध बातें कही थीं और (2) उसने व्यवस्था का अपमान किया था (21:28)। अपनी आरम्भिक टिप्पणियों में, वस्तुत: पौलुस ने कहा, ''उल्टे, मैं तो यहूदी होने पर गर्व महसूस करता हूं, और मेरे मन में व्यवस्था के प्रति बड़ा सम्मान रहा है!''

''व्यवस्था की ठीक रीति पर सिखाया गया'' पौलुस ''परमेश्वर के लिए ... धुन लगाए था'' (22:3घ)। कैसी धुन, यह उसने उन्हें शीघ्र ही बताना था। इससे पहले, उसने स्तब्ध करने वाले शब्द जोड़ दिए ''जैसे तुम सब आज लगाए हो'' (22:3ङ)। उसने उनकी धुन के लिए उनकी प्रशंसा की जिन्होंने थोड़ी देर पहले, उसे जोश में आकर इतना पीटा था कि वह मरने लायक हो गया था![16]

पौलुस उन्हें बताता है कि उसे पता था कि वे उसकी हत्या क्यों करना चाहते हैं क्योंकि कालान्तर में वह भी मसीही बनने वाले यहूदियों के बारे में वैसे ही सोचता था जैसे वे सोच रहे थे:

> और मैंने ... इस पंथ को यहां तक सताया कि उन्हें मरवा भी डाला। इस बात के लिए महायाजक और सब पुरनिये[17] गवाह[18] हैं; कि उन में से मैं भाइयों के नाम[19] पर चिट्ठियां लेकर दमिश्क को चला जा रहा था, कि जो वहां हों उन्हें भी दण्ड दिलाने के लिए बान्धकर यरूशलेम में लाऊं (22:4, 5)।[20]

फिर पौलुस ने, वस्तुत: *उन्हें उसे समझने* के लिए कहा। दमिश्क की ओर जाते हुए, उसके मन में जो बात कभी नहीं आ सकती थी, वह यीशु का अनुयायी बनना थी परन्तु मार्ग में कुछ अजीब बात हुई थी। वह तो प्रभु की खोज में नहीं निकला था, परन्तु प्रभु उसको खोजता हुआ आ गया था।

> जब मैं चलते-चलते दमिश्क के निकट पहुंचा, तो ऐसा हुआ कि दोपहर के लगभग एकाएक एक बड़ी ज्योति आकाश से मेरे चारों ओर चमकी। और मैं भूमि पर गिर पड़ा: और यह शब्द सुना, कि हे शाऊल, हे शाऊल तू मुझे क्यों सताता है? मैंने उत्तर दिया, कि हे प्रभु तू कौन है? उसने मुझ से कहा; मैं यीशु नासरी हूं, जिसे तू सताता है?[21] और मेरे साथियों ने ज्योति तो देखी, परन्तु जो मुझ से बोलता था उसका शब्द न सुना (22:6-9)।

उनमें से कुछ लोग जो यरूशलेम से दमिश्क को जाते समय उसके साथ थे, अभी

भी यरूशलेम में रह रहे होंगे और वे उसकी बातों के सच होने की गवाही दे सकते थे। उससे भी महत्वपूर्ण बात, पौलुस में आया बदलाव था। यदि उसने दर्शन में यीशु को *नहीं* देखा होता तो उसके सुनने वाले उसके जीवन में आए चौंकाने वाले बदलाव को कैसे बयान कर सकते थे?

पौलुस ने अपनी बात जारी रखते हुए बताया, ''तब मैंने कहा; हे प्रभु मैं क्या करूं?'' (22:10क)। दोष के बोझ से राहत के लिए यह एक पुकार थी: ''हे प्रभु क्षमा पाने के लिए, मैं अपनी भ्रमित धुन को सुधारने के लिए क्या करूं?'' बल्कि यह इससे भी बड़ी पुकार थी। अपने अब तक के जीवन में, पौलुस को लगता था कि उसे सब पता है कि वह कौन है, कहां जा रहा है और वहां पर कैसे पहुंचेगा। अचानक, उसके जीवन में उथल-पुथल मच गई, उसकी आत्म-छवि धूमिल हो गई थी और उनकी योजना निरर्थक हो चुकी थी। अब भविष्य के लिए उसके पास कोई योजना नहीं थी। इस कारण वह यह भी पूछ रहा था, ''हे प्रभु, मैं अपने बाकी जीवन का क्या करूं?'' जब तक मैं और आप यह प्रश्न पूछने के लिए तैयार नहीं हैं, तब तक यीशु हमारे जीवनों में कभी भी कोई परिवर्तन नहीं ला सकता।

प्रभु ने पौलुस को बताया था, ''उठकर दमिश्क में जा, और जो कुछ तेरे करने के लिए ठहराया गया है वहां तुझ से सब कह दिया जाएगा'' (22:10ख)। मार्ग में उसे उसके पाप के बारे में बताया गया था और दमिश्क में परिवर्तित किया गया था। प्रेरित ने वह शानदार वर्णन जारी रखा:

> जब उस ज्योति के तेज के मारे मुझे कुछ दिखाई न दिया, तो मैं अपने साथियों के हाथ पकड़े हुए दमिश्क में आया। और हनन्याह नाम का व्यवस्था के अनुसार एक भक्त मनुष्य, जो वहां के रहनेवाले सब यहूदियों में सुनाम था,[22] मेरे पास आया। और खड़ा होकर मुझ से कहा; हे भाई शाऊल फिर देखने लग: उसी घड़ी मेरे नेत्र खुल गए और मैंने उसे देखा। तब उसने कहा; हमारे बापदादों के परमेश्वर ने तुझे इसलिए ठहराया है कि तू उसकी इच्छा को जाने, और उस धर्मी को देखे,[23] और उसके मुंह से बातें सुने। क्योंकि तू उसकी ओर से सब मनुष्यों के साम्हने उन बातों का गवाह होगा, जो तूने देखी और सुनी हैं। अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर पापों को धो डाल[24] (22:11-16)।

पौलुस जानता था कि यहूदियों द्वारा उससे घृणा करने का वास्तविक कारण अन्यजातियों में उसका प्रचार करना था।[25] वह भीड़ को समझाना चाहता था कि अन्यजातियों में जाने का यह विचार उसका नहीं, बल्कि प्रभु का था। प्रभु ने हनन्याह के शब्दों में इसका संकेत दिया था: ''तू ... *सब मनुष्यों के साम्हने* उन बातों का गवाह होगा।'' अब पौलुस ने अपने ईश्वरीय कार्य के बारे में साफ़-साफ़ कहना था।

वह दमिश्क और अरब में तीन साल से अधिक के समय को छोड़कर अपने मन परिवर्तन के बाद पहली बार यरूशलेम जाने की बात पर आ गया (गलतियों 1:18; प्रेरितों

9:26-30)।[26] ''जब मैं फिर यरूशलेम में आकर मन्दिर में प्रार्थना कर रहा था, तो बेसुध हो गया'' (प्रेरितों 22:17)। पौलुस पर तीसरा आरोप यह था कि उसने मन्दिर के विरुद्ध ''हर जगह सब लोगों को'' सिखाकर प्रचार किया था (21:28)। इसके विपरीत, मन परिवर्तन के बाद यरूशलेम में लौटकर, सबसे पहले जाने वाले स्थानों में मन्दिर भी था। वहां पर उसने प्रार्थना की, और प्रभु को देखा। कोई भी निष्पक्ष व्यक्ति बता सकता था कि उस पर लगाए गए आरोप गलत थे।

पौलुस ने अपना दर्शन बताया: ''और उसको देखा कि मुझ से कहता है; जल्दी करके यरूशलेम से झट निकल जा: क्योंकि वे मेरे विषय में तेरी गवाही न मानेंगे'' (22:18)। पतरस की तरह जब उसने शुद्ध और अशुद्ध जानवरों का दर्शन देखा था, पौलुस ने भी प्रभु से बहस की थी:[27]

> हे प्रभु वे तो आप जानते हैं, कि मैं तुझ पर विश्वास करनेवालों को बन्दीगृह में डालता और जगह-जगह आराधनालय में पिटवाता था। और जब तेरे गवाह स्तिफनुस का लोहू बहाया जा रहा था तब मैं भी वहां खड़ा था, और इस बात में सहमत था, और उसके घातकों के कपड़ों की रखवाली करता था (22:19, 20)।

वस्तुत: उसने कहा था, ''हे प्रभु, निश्चय ही जब वे याद करेंगे कि मैं कैसा था और मुझे बदला हुआ देखकर वे मेरी गवाही को मान लेंगे।''

पौलुस कहीं दूसरी जगह जाने के बजाय अपने साथी यहूदियों के साथ यरूशलेम में ठहरना चाहता था। यकीनन ही, प्रभु जानता था, कि पौलुस के पुराने साथी उसे सुनने के बजाय विश्वासघाती मानकर उसकी हत्या करने की कोशिश करेंगे (9:29)। पौलुस की हिचकिचाहट के लिए प्रभु के उत्तर ने बहस की कोई गुंजाइश नहीं छोड़ी: ''और उसने मुझ से कहा, चला जा!'' (22:21क)। फिर उसने पौलुस को विशेष आज्ञा पर ज़ोर दिया था: ''क्योंकि मैं तुझे अन्यजातियों के पास दूर-दूर भेजूंगा'' (22:21ख)।[28]

पौलुस ने अपनी बात में ''अन्यजाति'' शब्द का जितना इस्तेमाल हो सकता था, किया। सम्भवत: उसकी योजना यह बताने की थी कि परमेश्वर ने अन्यजातियों के बीच उसके काम को कैसे आशीष दी थी। यकीनन ही वह अपने सुनने वालों से यह अपील करने की इच्छा रखता था कि वे जी उठे प्रभु में विश्वास कर लें, परन्तु उसे यह अवसर नहीं मिला। उसके ''अन्यजातियों'' कहते ही भीड़ भड़क उठी। ''*वे इस बात* [अन्यजातियों का नाम लेने] तक उसकी सुनते रहे; तब ऊंचे शब्द से चिल्लाए, कि ऐसे मनुष्य का अन्त करो; उसका जीवित रहना उचित नहीं'' (22:22)।[29]

लूका ने टिप्पणी की कि ''वे चिल्लाते[30] और कपड़े फेंकते और आकाश में धूल उड़ाते थे'' (22:23)। हम संक्षेप में नहीं बता सकते कि उन्होंने वास्तव में क्या किया। शायद उन्होंने पौलुस पर पथराव करने की तैयारी में अपने चोगों को उतार दिया (नोट 22:20),

परन्तु वे केवल उस पर धूल ही फैंक सके (नोट 2 शमूएल 16:13)। जे. डब्ल्यू. मैक्गार्वे की, न्यू कमैंट्री ऑन टेक्सास ऑफ़ अपोस्टल्ज़ के अनुसार शायद उन्होंने धूल उड़ाकर केवल ''पागल जानवरों की तरह अपना गुस्सा निकाला'' जैसे क्रुद्ध बैल भूमि को खोदने लगता है।[31] हम केवल इतना ही जानते हैं कि ''अन्यजातियों'' शब्द सुनकर वे उन्मत्त हो गए।[32]

हर प्रचारक के साथ पौलुस की तरह कुछ न कुछ होता ही है। उसका प्रवचन अच्छा भला चल रहा होता है; वह अपने सुनने वालों के चेहरों को देखकर बता सकता है कि उन्हें उसका संदेश अच्छा लग रहा है। फिर शायद वह कोई ऐसा शब्द या बात कहता है जिससे अचानक लोगों के चेहरों का रंग बदल जाता है।[33] इससे स्पष्ट है कि यदि वे लोग सभ्य नहीं होते और गैर कानूनी न होते तो वे उसे बाहर ले जाकर पत्थर मारते।

सुनने वालों के लिए यहां एक सबक है। ''अन्यजाति'' शब्द पौलुस के सुनने वालों के लिए घृणित शब्द था। क्या कोई ऐसा शब्द है जो किसी की नब्ज़ को छूता हो, कोई ऐसा वाक्यांश जो टिक न सकता हो, बाइबल का कोई विषय जो हमें परेशान (यहां तक कि क्रोधित) कर देता हो? मन्दिर के आंगन में यहूदियों ने ''अन्यजाति'' शब्द पर अपना क्रोध दिखाकर अपने मन की पूर्वधारणा और असहिष्णुता को दिखा दिया। जो शब्द और विषय हमें बेचैन करते हैं शायद वे हमारे हृदयों के बारे में उससे अधिक कह देते हैं जितना हमें अहसास होता है।[34]

प्रचारकों के लिए भी एक सबक है। भीड़ को दिए गए पौलुस के प्रवचन को पढ़कर मैं इस बात से प्रभावित होता हूं कि अपने श्रोताओं को ठोकर से बचाने के लिए पौलुस कहां तक चला गया। उसने अपने पूरे प्रवचन में यहूदी शब्दावली का प्रयोग किया। प्रभु के आत्म-परिचय को छोड़, उसने कहीं भी ''यीशु'' नाम का प्रयोग नहीं किया। उसने यह उल्लेख नहीं किया कि हनन्याह एक मसीही था या यह कि ''प्रभु'' जिसने उसे मन्दिर में दर्शन दिया था यीशु ही था। फिर, उसने ठोकर देने वाले शब्द ''अन्यजातियों'' का प्रयोग क्यों किया? क्योंकि ठोकर से बचाने और समझौता करने में अन्तर है। पौलुस जहां तक हो सके यहूदियों को चिढ़ाने से बचना चाहता था, परन्तु वह समझौता नहीं करना चाहता था। प्रभु ने कहा था, ''मैं तुझे दूर-दूर तक अन्यजातियों में भेजूंगा,'' सो पौलुस ने यही बात कही थी। सिखाते समय आप अपने छात्रों के विरोध से बचने के लिए केवल उनकी समझ के अनुसार बात कर सकते हैं। मनुष्यों को प्रसन्न करने वाले लोग किसी भी ऐसे ''शब्द'' के इस्तेमाल से बचेंगे जो किसी को किसी भी प्रकार ठेस पहुंचाता हो; परन्तु, यदि वह ''शब्द'' *परमेश्वर का* वचन है, तो परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले लोग सच्चाई का प्रचार करेंगे, उसकी कीमत उन्हें चाहे कुछ भी क्यों न चुकानी पड़े (गलतियों 1:10)।

रोमियों के सामने उसका प्रत्युत्तर (22:24-29)

यदि रोमी सेनापति को पौलुस के प्रवचन से उस गड़बड़ी का कारण खोजने की आशा थी, तो उसे निराशा ही मिली होगी। वह सम्भवत: अरामी भाषा नहीं समझता था,

और यदि समझता भी था,[35] तो उसे हैरानी हुई होगी कि ''अन्यजाति'' शब्द इतना हिंसक रूप कैसे धारण कर सकता है। पौलुस के प्रत्युत्तर के अन्त में वह उतना ही जान पाया जितना आरम्भ में जानता था।

परेशान,''पलटन के सूबेदार ने कहा; कि इसे गढ़ में ले जाओ'' (आयत 24क) ताकि भीड़ शांत हो जाए। फिर उसने आज्ञा दी कि पौलुस को ''और कोड़े मारकर जांचो, कि मैं जानूं कि लोग किस कारण उसके विरोध में ऐसा चिल्ला रहे हैं'' (आयत 24ख)। कार्यवाही का रोमियों का यह मानक ढंग था। वे किसी अपराधी को पीटे बिना उससे सच्ची बात बताने की अपेक्षा नहीं करते थे।[36]

क्रूसारोहण के बाद, कोड़े मारना रोमियों द्वारा दिया जाने वाला क्रूर दण्ड माना जाता था। लकड़ी पर चमड़े के चार या पांच तसमे लगाए जाते थे। उन तसमों में हड्डी या धातु के टुकड़े जड़े हुए होते थे। किसी कुशल जल्लाद द्वारा घुमाकर मारने से, हर कोड़ा मांस में धंस जाता था, जिससे पट्ठे और हड्डियां दिखाई देने लगती थीं। इस प्रकार की ''जांच'' से बहुत से लोग जीवन भर के लिए अपंग हो जाते थे; कई तो मर जाते थे; कुछ ही (कुशल) सही सलामत बचते थे। पौलुस को कई बार मारा गया था (2 कुरिन्थियों 11:24, 25), परन्तु अभी तक उसे रोमी कोड़ों की मार नहीं झेलनी पड़ी थी।

कमांडर जल्लादों के साथ यातना कक्ष तक नहीं गया; शायद वह यह कठिन परीक्षा नहीं देना चाहता था। यह कक्ष सम्भवत: वही जगह थी जहां पर पीलातुस की आज्ञा से यीशु को कोड़े मारे गए थे (यूहन्ना 19:1; मत्ती 27:26; मरकुस 15:15)। पौलुस के कपड़े उसके शरीर से उतार दिए गए थे; फिर उसे खम्भे से बांध दिया गया।[37] जब कोड़े मारने वाला उसे कोड़ा मारने के लिए तैयार था, तो इस प्रेरित ने सूबेदार से बात की: ''जब उन्होंने उसे तसमों से बान्धा[38] तो पौलुस ने उस सूबेदार से जो पास खड़ा था, कहा, क्या यह उचित है, कि तुम एक रोमी मनुष्य को, और वह भी बिना दोषी ठहराए हुए कोड़े मारो?'' (आयत 25)।[39]

पौलुस के सीधे से प्रश्न ने यातना देने वालों को यातना सहने वाले बना दिया। किसी रोमी नागरिक को बांधकर कोड़े मारना कानून के विरुद्ध था;[40] यह बात वह जानता था, और वे भी जानते थे। वे यह भी जानते थे कि यदि वे उसे पीटना जारी रखेंगे तो नौकरी और शायद जीवन से भी हाथ धो सकते थे; क्योंकि पौलुस सचमुच एक रोमी नागरिक था। सूबेदार ने सरदार को ढूंढ़ने में बिल्कुल समय नहीं गंवाया: ''सूबेदार ने ... पलटन के सरदार के पास जाकर कहा; तू यह क्या करता है? यह तो रोमी मनुष्य है'' (आयत 26)।

भयभीत होकर, ''पलटन के सरदार ने उसके पास आकर कहा; मुझे बता, क्या तू रोमी है? उसने कहा हां'' (आयत 27)। शायद उसे पौलुस के उत्तर पर विश्वास करना कुछ कठिन लगा होगा। पूरी कोशिश करने पर भी यह छोटा सा, गंजा[41] यहूदी अधिक प्रभावशाली नहीं लगता था (2 कुरिन्थियों 10:10)। अब, वस्त्र विहीन होने पर, उसके शरीर के पुराने दाग (गलतियों 6:17) और ताज़ा घावों सहित चोटों से भरे शरीर से, वह एक सभ्य रोमी नागरिक के बजाय तीन बार हारे हुए[42] आदमी के जैसा दिखाई देता था।

मैं अधिकारी के स्वर में संशयवाद[43] को सुन सकता हूं जब उसने उत्तर दिया, ''कि मैंने रोमी होने का पद बहुत रुपए देकर पाया है'' (आयत 28क)।[44] सम्भवत: वह सोच रहा होगा, ''यह मारा मारा फिरने वाला यहूदी इतना धन कैसे इकट्ठा कर पाया होगा?'' ''पर'' पौलुस ने बड़ी सहजता से कहा ''मैं तो जन्म से रोमी हूं'' (आयत 28ख)।[45]

तरसुस में जन्म लेने से पौलुस रोमी नागरिक नहीं बन गया; तरसुस एक स्वतन्त्र नगर था रोमी कॉलोनी नहीं। इसलिए, उससे पहले अवश्य ही उसके पिता या दादा रोमी नागरिक रहे होंगे। वह नागरिकता कैसे हासिल की गई थी, हम नहीं जानते। सम्भवत:, पौलुस के किसी पूर्वज ने रोमी सरकार की विशेष सेवा की थी,[46] शायद पोम्पे या मार्क एंटनी की, क्योंकि दोनों के तरसुस से सम्बन्ध थे।

पौलुस के स्वर या बर्ताव में कुछ ऐसा था जिससे उसे सुनने वालों के मन में कोई प्रश्न नहीं रहा क्योंकि जो होने का वह दावा करता था वह यह था भी![47] ''तब जो लोग उसे जांचने पर थे, वे तुरन्त उसके पास से हट गए'' (आयत 29क)। मैं उन्हें कांपते हाथों से चमड़े की डोरियों को टटोलते और उसे खोलने की जल्दी करते हुए देख सकता हूं। जे. डब्ल्यू. मैकग्वें ने सही टिप्पणी की: ''हम कानून के प्रभुत्व की प्रशंसा ही कर सकते हैं, जो, किसी सुदूर क्षेत्र में और किसी जेल की दीवारों के भीतर केवल इतने ऐलान से ही कि 'मैं रोमी नागरिक हूं' यन्त्रणा के हथियारों को धराशायी कर सकता है।''

यहां तक कि ''पलटन का सरदार भी यह जानकर कि यह रोमी है, और मैंने उसे बान्धा है, डर गया''[48] (आयत 29ख)। यदि पौलुस को पीटा जाता, तो सम्भवत: उसकी नागरिकता छीन ली जाती जो उसने काफी धन देकर पाई थी, उसकी जान भी जा सकती थी। निस्संदेह उसे इस बात से राहत मिली कि दुखांत होने से टल तो गया, परन्तु समस्या और भी जटिल होने वाली थी। इस अहानिकर यहूदी/रोमी से इतनी घृणा क्यों की गई?

अगले पाठ में, हम पलटन के सरदार द्वारा ''सच्चाई को जानने'' की कोशिशों को जारी रखने के विषय में देखेंगे।[49] अब के लिए, आइए देखें कि जो कुछ हमने अध्ययन किया है उससे हम क्या सीख सकते हैं।

हमारा खेद प्रकट करना

याद रखें, कि बाइबल के शब्द ''खेद प्रकट करना'' का उस शब्द से कोई भी सम्बन्ध नहीं है जिसे हम ''अपोलोजायज़िंग'' कहते हैं। बहुत से लोग जो मसीही होने का दावा करते हैं, अपने विश्वास के कारण लज्जित हैं और उन्हें लगता है कि जिस बात को वे मानते हैं उसके लिए उन्हें खेद प्रकट करना चाहिए। बाइबल का खेद प्रकट करना गलती को मानना नहीं, बल्कि सही के लिए तर्क देना है। शास्त्र के पद, ''... जो कोई ... आशा के विषय में कुछ पूछे, ... उसे उत्तर देने के लिए''(1 पतरस 3:15ख) से मैं कई सबक बनाता हूं:

1. *तैयार रहें।* कभी न कभी, पौलुस की तरह, आपको भी अपने विश्वास के प्रत्युत्तर के लिए बुलाया जाएगा सो अभी से तैयार हो जाएं।

2. *भद्र बनें।* इस गिरफ्तारी से कुछ देर पहले पौलुस ने लिखा था, ''बुराई के बदले किसी से बुराई न करो। ... बुराई से न हारो परन्तु भलाई से बुराई को जीत लो'' (रोमियों 12:17-21)। उसने इसे लिखा तो था, परन्तु क्या वह इसे अपने जीवन में अपना सका? उसके लहू के लिए चिल्ला रही उन्मादी यहूदी भीड़ और उसके मांस को नोचने के लिए तैयार संवेदनाहीन रोमी सिपाहियों के साथ सचमुच ही पौलुस कठिन परीक्षा में था! उसने शांत और भद्र बनकर परीक्षा पास कर ली। हो सकता है कि आपके विश्वास को चुनौती देने वाले झगड़ालू हों, परन्तु आप उनके जैसे न बनें।

3. *व्यक्तिगत बनें।* हो सकता है कि बाइबल की सारी बातें आपको पता न चलें या आप हर प्रश्न का उत्तर न दे पाएं, परन्तु आप दूसरों को यह तो बता सकते हैं कि आप मसीही कैसे बने थे। ''जो कुछ यीशु ने आपके लिए किया है उससे आप को संसार का सबसे बड़ा अधिकार मिला है!'' पौलुस का संदेश मूलत: उसके मनपरिवर्तन के अनुभव को दोहराना था। बाइबल के बारे में आपको अधिक से अधिक सीखते रहना चाहिए ताकि आप अपने विश्वास का प्रत्युत्तर देने में निपुण हो सकें, परन्तु अपना संदेश हमेशा व्यक्तिगत रखें।

4. *मसीह पर केन्द्रित हों।* पौलुस ने अपने मनपरिवर्तन के बारे में तो बताया, परन्तु उसका उद्देश्य लोगों का ध्यान अपनी ओर नहीं, बल्कि प्रभु की ओर आकर्षित करना था। ''यीशु नासरी'' नाम ने उसके सुनने वालों को उसके बारे में याद दिलाया जिसे क्रूस पर चढ़ाया गया था, और मार्ग में पौलुस के दर्शन के वृत्तांत से उन्हें पता चला था कि यही यीशु मुर्दों में से जी उठा है। हमें लोगों को अपने लिए नहीं, बल्कि यीशु के लिए परिवर्तित करना है।

5. *लचीले बनें।* पौलुस का मूल संदेश एक ही रहता था, परन्तु इस अवसर पर उसकी प्रस्तुति का ढंग आराधनालयों में प्रस्तुत करने से भिन्न था। जो लोग आपको चुनौती देते हैं, उनके बारे में जानिए और अपना उत्तर उसकी आवश्यकता के अनुसार दें।

6. *चुनौती देने वाले बनें।* यह बताने के बाद कि यीशु ने क्या किया, पौलुस ने बताया कि मनुष्य को क्या करना चाहिए। यदि यीशु मसीह था, तो हर एक को उसे वैसे ही ग्रहण करना चाहिए जैसे उसने किया था अर्थात हर एक को चाहिए कि ''उठ [कर], बपतिस्मा ले और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाले'' (आयत 16ख)। फिर हर एक को चाहिए कि वह अपना जीवन प्रभु को दे दे। अपने विश्वास का प्रत्युत्तर देते समय, आपका उद्देश्य बहस करना नहीं, बल्कि आत्माओं को जीतना हो। सभी उपस्थित लोगों को प्रभु के साथ वही प्रतिज्ञा करने की चुनौती दें जो आपने की है।

7. *तालमेल रखने वाले बनें।* आपका प्रत्युत्तर किसी को तभी विश्वास दिला सकता है यदि आपके जीवन का आपकी बातों से तालमेल हो। पौलुस अपने विश्वास के लिए मरने को तैयार था; क्या लोग देख सकते हैं कि आप अपने लोगों के लिए जीने को तैयार हैं?

8. *संवेदनशील बनें।* यद्यपि हमें अपने विश्वास के लिए कष्ट उठाने के लिए तैयार रहना चाहिए, परन्तु हमें सहज बुद्धि का भी प्रयोग करना चाहिए। यदि उसके कष्ट सहने से मसीह का काम न बढ़े तो पौलुस वह कष्ट उठाने को तैयार नहीं था। वह रोमी नागरिक

के रूप में अपने अधिकारों पर ज़ोर देने से नहीं झिझका। आपको अविश्वासियों से गालियां सुनने की आवश्यकता नहीं। भद्र रहें, परन्तु वहां से चले जाएं।

9. *दृढ़ बनें।* पूरी कोशिश करने के बाद, भी यदि आप उनको समझा न सकें, जिन्होंने आपके विश्वास को चुनौती दी है तो निराश न हों। पौलुस भीड़ को नहीं मना सका था। अगले चार अध्यायों में पौलुस के तीन अन्य प्रवचनों के साथ एक व्यक्तिगत अध्ययन दर्ज है। जहां तक शास्त्र बताता है, एक भी व्यक्ति परिवर्तित नहीं हुआ; परन्तु यह प्रेरित वही कर रहा था जो परमेश्वर चाहता था कि वह करे। यदि आप अपने विश्वास के बारे में दूसरों को बताते हैं, तो आप वही करते हैं जो परमेश्वर चाहता है कि आप करें, ''परिणाम'' आपको चाहे दिखाई दें या नहीं, परन्तु हिम्मत कभी न हारें।

सारांश

अन्त में, आइए पौलुस के मन परिवर्तन के वृत्तांत पर लौटते हैं। उसके प्रवचनों में मन परिवर्तन और वचनबद्धता पर बहुत से सबक हैं।[50] उनमें से एक सबसे अधिक रोमांचक यह है कि प्रभु के सामने कोई भी मामला आशाहीन नहीं है! यदि वह पौलुस को बचाकर उसके जीवन को पूरी तरह से बदल सकता था, तो वह आपके जीवन में भी वैसा ही कर सकता है! क्या आपने यीशु में बपतिस्मा ले लिया है ताकि उसके लहू से आपके पाप धोए जा सकें (आयत 16)? क्या आपने अपना जीवन उसे वैसे ही दे दिया है जैसे पौलुस ने दिया था? मन्दिर में पौलुस के सुनने वालों के मन इतने कठोर थे कि उन पर वचन का कोई असर न हुआ, परन्तु मुझे आशा है कि आपके मन वचन को ग्रहण करने वाले होंगे। *अब* आज्ञा मानने की बारी आप की है।

प्रवचन नोट्स

एंटोनियो के किले की सीढ़ियों पर पौलुस के प्रवचन को तीन भागों में बांटा जा सकता है: (1) उसका प्रारम्भिक व्यवहार (आयतें 3-5); (2) उसका रोमांचकारी परिवर्तन (आयतें 6-13, 16); (3) उसकी आज्ञा को पूरा करना (आयतें 14, 15, 17-21)। (यह तरीका मैंने कई स्त्रोतों से अपनाया है।)

पौलुस के जीवन का सुझाया गया कालक्रम

तिथि	घटना	प्रेरितों के काम में कहां
सन 1 (?)	जन्म	–
34	मन परिवर्तन	9
46–48	पहली मिशनरी यात्रा	13–14
49	यरूशलेम की कॉन्फ्रेंस	15
49–52	दूसरी मिशनरी यात्रा	16–18
53–57	तीसरी मिशनरी यात्रा	19–21
57	यरूशलेम में गिरफ्तारी	21–22
57–60	कैसरिया में कैद	23–26
60	रोम में जाना	27–28
61–63	रोम में पहली कैद	28
66–67	रोम में दूसरी कैद	–
67	मृत्यु	–

पाद टिप्पणियां

अपोलोजिया एक मिश्रित शब्द है जो *अपो* (''से'') के साथ *लोगोस* (''शब्द'' या ''तर्क'') का मेल है। [2]मसीही विश्वास के पक्ष में तर्कों के अध्ययन को ''अपोलोजैटिक्स'' कहा जाता है। [3]यह शब्द प्रेरितों 22:1; 24:10; 25:8, 16; 26:1, 2, 24 में मिलता है। आठवीं बार यह शब्द प्रेरितों 19:33 में मिलता है, जहां सिकन्दर नाम के एक यहूदी ने इफिसुस में एम्फीथियेटर में बचाव करने की कोशिश की । [4]सुझाव दिया गया है कि जैसे लूका ने बार-बार यह दिखाया है कि पौलुस किसी भी रोमी कानून को तोड़ने का दोषी नहीं था, वैसे ही प्रेरितों के काम का सम्पूर्ण चौथा भाग एक कानूनी बचाव के रूप में हो सकता है। प्रेरितों के काम के ''अपोलोजैटिक उद्देश्य'' की चर्चा ''प्रेरितों के काम, भाग-1'' के पृष्ठ 20 पर की गई है। [5]पृष्ठ 43 पर मंदिर का रेखाचित्र देखिए। [6]इस प्रेरित का यरूशलेम में आने का एक उद्देश्य ''परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार की गवाही देना'' था (20:24 ख); यह उसका पहला अवसर होना था। [7]स्पष्टत:, कमांडर ने पौलुस के बंधे हाथों में से कम से कम एक को खोलने की अनुमति दे दी (21:33)। [8]इब्रानी की उपभाषा अरामी थी। [9]पौलुस के आरम्भिक शब्दों की तुलना प्रेरितों 7:2 में स्तिफनुस के शब्दों से कीजिए। स्तिफनुस ने महासभा के सदस्यों को ''हे भाइयो और पितरो'' कहकर सम्बोधित किया, इसलिए कई लोग आश्चर्य करते हैं कि अध्याय 21 में हत्यारी भीड़ में सम्भवत: सभा के सदस्य भी थे। निश्चय ही, पौलुस का ''पितरो'' कहने का सरल अर्थ भीड़ में बुजुर्ग पुरुषों को सम्मान देना था। [10]यदि पौलुस ने यूनानी में बात की हो तो सभी ने नहीं, तो अधिकतर लोगों ने तो उसकी बात समझ ही ली होगी। परन्तु, पौलुस उनके साथ घनिष्ठता बढ़ाना चाहता था।

[11]यह हवाला *मसीही* भाइयों का नहीं, बल्कि उसके साथी यहूदियों का है। [12]रोम के अधिकतर भाग में सारे आराधनालयों में यहूदियों का सामना करते हुए पौलुस ने ''...पवित्र शास्त्रों से उनके साथ विवाद किया। और उनका अर्थ खोल खोलकर समझाता था, कि ... यही यीशु जिसकी मैं तुम्हें कथा सुनाता हूं,

मसीह है'' (17:2, 3)। हमें आशा होगी कि यरूशलेम के बारे में भी ऐसा ही पढ़ें, परन्तु वहां स्थिति अलग थी। ये लोग उसके लोहू के लिए चिल्ला रहे थे; इससे पहले कि वे यीशु के बारे में उससे सुनें, उसके लिए उन्हें भरोसा दिलाना आवश्यक था। [13]प्रेरितों 22 वाली भीड़ को पौलुस के अधिकतर सम्बोधन को शाऊल के मन परिवर्तन पर दो प्रवचनों में बताया गया। इस पाठ पर विस्तृत टिप्पणियों के लिए ''प्रेरितों के काम, भाग-2'' के पृष्ठ 95 से 116 पर प्रवचनों को देखिए। [14]यूनानी शास्त्र में ''पांवों में'' है (देखिए KJV)। उन दिनों में छात्र मूलत: बैंचों या कुर्सियों पर बैठे अपने शिक्षकों के पांवों के सामने बैठते थे। [15]प्रेरितों के काम (5:34) में हमारा सामना पहले गमलीएल से हुआ था। उससे सम्बन्धित नोट्स ''प्रेरितों के काम, भाग-1'' के पृष्ठ 181 पर देखिए। [16]वहां के यहूदियों के लिए पौलुस का अभिवादन वैसा ही था जैसा अथेने वासियों का (17:22)। दोनों अभिवादनों में इस समय न कहे गए अन्य सत्यों को छोड़ कुछ निश्चित सकारात्मक तथ्यों पर प्रकाशन था। यहूदियों के उत्साह के बारे में पौलुस की भावनाओं के पूर्ण कथन के लिए, रोमियों 10:2 पढ़िए, जो कुछ माह पूर्व ही लिखा गया था। [17]''सब पुरनिये'' महासभा की बात करने का एकमात्र ढंग था। यहां पर प्रयुक्त शब्द ''पुरनिये'' कलीसिया के प्राचीनों के लिए नहीं, बल्कि बूढ़े यहूदी अगुओं के लिए है। ''प्रेरितों के काम, भाग-1'' के पृष्ठ 200 पर शब्दावली में ''महासभा'' देखिए। [18]जिस समय पौलुस मसीहियों को सता रहा था उस समय कैफा महायाजक था (''प्रेरितों के काम, भाग-1'' में प्रेरितों 4:6 पर नोट्स देखिए)। जिस समय पौलुस ने अंटोनिया के किले की सीढ़ियों से बात की थी, उस समय महायाजक हनन्याह था (23:2)। परन्तु, यह सम्भव है कि कैफा अभी भी जीवित था। यह भी सम्भव है कि महासभा के कुछ वर्तमान सदस्य, शायद महायाजक ही, उस सभा का भाग थे जिसने पौलुस को अधिकार देकर दमिश्क में जाने के लिए कहा था। इसके विपरीत पौलुस इतना ही सुझाव दे रहा होगा कि महासभा के *रिकॉर्ड* इस बात की पुष्टि कर देंगे कि वह क्या कह रहा था। [19]''भाइयों'' मसीहियों के लिए नहीं, बल्कि साथी यहूदियों के लिए प्रयुक्त हुआ। [20]प्रेरितों के काम में मिलने वाला पौलुस के मन परिवर्तन का यह दूसरा वृत्तांत है। पहला वृत्तांत अध्याय 9 में था और तीसरा अध्याय 26 में है। यह वृत्तांत अध्याय 9 वाले वृत्तांत से इस बात में भिन्न है कि यह वृत्तांत पौलुस के दृष्टिकोण से बताया गया है। प्रत्येक वृत्तांत सुनने वालों की आवश्यकता को ध्यान में रखकर बताया गया है। तीनों वृत्तांत एक दूसरे के पूरक हैं। इन तीनों वृत्तांतों के बारे में ''प्रेरितों के काम, भाग-2'' के पृष्ठ 95 से 116 में दो प्रवचनों में बताया गया था।

[21]पौलुस ने ''पुनरुत्थान'' शब्द का प्रयोग नहीं किया, परन्तु अधिकतर सुनने वालों ने समझ जाना था कि पौलुस यह कह रहा था कि यीशु मृत नहीं है, इस कारण वह जी उठा है। यरूशलेम में आधिकारिक समाचार यह था कि यीशु की देह को चुरा लिया गया था (मत्ती 28:11-15)। पौलुस के वृत्तांत से पता चला कि वह कहानी झूठी थी, और किसी ने उसका विरोध नहीं किया। [22]हनन्याह भी एक मसीही था, परन्तु पौलुस ने उसके चरित्र का वह पक्ष प्रस्तुत किया जिससे उसके यहूदी श्रोताओं पर उसके पक्ष में प्रभाव जाना था। [23]''धर्मी'' शब्द का प्रयोग मसीहा के लिए होता था (प्रेरितों 3:14; 7:52; ध्यान दें यशायाह 53:11)। [24]पौलुस ने बपतिस्मा लेने की आज्ञा मानने में हिचकिचाहट नहीं की (9:18)। [25]विशेष तौर पर, उससे घृणा इसलिए की जाती थी क्योंकि वह प्रचार करता था कि अन्यजातियां पहले यहूदी धर्मांतरित बनें बिना ही उद्धार पा सकती हैं। [26]इस दर्शन पर ''प्रेरितों के काम, भाग-2'' के पृष्ठ 134 पर नोट्स देखिए। कई लोगों का विचार है कि पौलुस को यह दर्शन बाद की किसी यात्रा में मिला था, परन्तु यह उसके मनपरिवर्तन के बाद उसकी पहली यात्रा पर अधिक उपयुक्त लगता है। [27]प्रेरितों के काम में लूका द्वारा शामिल की गई पतरस और पौलुस के जीवन की बहुत सी समानताओं में से एक यह है। [28]कई लोगों का विचार है कि पौलुस भीड़ में से किसी *मसीही* यहूदियों के सामने अपना पक्ष रख रहा होगा जिन्होंने अन्यजातियों में उसकी सेवकाई का विरोध किया था। [29]''शब्द'' *(लोगोस)* के लिए यूनानी शब्द का अर्थ ''कथन'' हो सकता है, सो हिन्दी के अनुवाद में इसका अनुवाद गलत नहीं हुआ है। परन्तु, पौलुस का अन्तिम कथन केवल ''अन्यजातियों'' शब्द के कारण भड़काने वाला था। इस कारण मैं ''शब्द'' से ''बात'' को महत्व देता हैं। [30]शायद वे यही अलाप करने लगे, कि ''इसे मार डालो! इसे मार डालो!''

[31]सुझाव दिया गया है कि उनका यह कार्य बिल्कुल वैसा ही था जैसा पौलुस ने अपने कपड़े झाड़ते हुए संकेत दिया था कि जिन्होंने उसका विरोध किया उन्हें रद्द कर दिया गया था (18:6; 13:51 भी देखिए)। [32]पौलुस पर विशेष तौर पर यूनानियों (अर्थात अन्यजातियों) को मन्दिर के पवित्र भाग में ले जाने का आरोप था। अन्यजातियों के उल्लेख से पौलुस के सुनने वालों के दिमाग में वही बात आ गई होगी। [33]ये ''भरे हुए'' शब्द या विषय आत्मिक बारूदी सुरंगो की तरह हैं। वे अस्तरक प्रचारक से उसकी अज्ञानता के कारण तब तक छिपी, अदृश्य रहती हैं अर्थात उसे इनका पता नहीं चलता जब तक वह इन्हें अनजाने में छूता नहीं और ये उसके सामने फट नहीं जाती! [34]''भरे हुए'' शब्दों और विषयों के लिए सुनने वालों की आवश्यकता के अनुसार प्रासंगिकता बनाई जा सकती है। शायद उदारता से चंदा देने या प्रभु के लिए जीवन पूरी तरह से समर्पित करने की चुनौती देने की बात अधिक प्रसिद्ध नहीं है। शायद कुछ नैतिक मुद्दे मनों को छू सकते हैं। शायद कोई भी उस पूर्व धारणा के विषय में बात नहीं करना चाहता जो पहले से है। हो सकता है कि इन शब्दों में कलीसिया के कुछ ''मुद्दे'' हों जिससे कुछ सदस्य क्रोधित हो जाएं। ध्यान दें कि बाइबल से बाहर की बातों तथा धारणाओं से हमें अप्रसन्न होना *चाहिए,* परन्तु हम उन बातों पर विचार कर रहे हैं जो या तो बाइबल से सम्बन्धित हैं या कम से कम अपने आप में कोई हानि पहुंचाने वाली नहीं। सुनने वालों को उत्साहित करना चाहिए कि वे जांचकर देख सकें कि क्या उनके मन खुले हैं। [35]हो सकता है किसी ने उसके लिए अनुवाद किया हो। [36]संदिग्ध लोगों से ''सच'' बुलवाने के लिए वर्षों से बहुत से क्रूर ढंग अपनाए जाते रहे हैं। उनमें से कइयों का उल्लेख किया जा सकता है। यदि ऐसे ढंग स्थानीय कानून द्वारा प्रतिबंधित हैं तो उनके लिए धन्यवाद देना उपयुक्त हो सकता है। [37]आम तौर पर हाथ तथा पांव दोनों खम्भों के साथ बांध दिए जाते थे। यदि ऐसा हुआ, तो यह अगबुस की भविष्यवाणी के कुछ भाग का पूरा होना हो सकता है (21:11)। [38]इसका अर्थ यह भी हो सकता है कि उन्होंने उसे तश्मों से हवा में फहराया, परन्तु अधिक प्रचलित ढंग चाबुक मारने वाले खम्भे के साथ बांधना होता था। [39]प्रेरितों 16 की तरह जहां पौलुस ने मार पड़ने पर अपनी रोमी नागरिकता प्रकट नहीं की थी, हम पूछते हैं, ''अब क्यों? पहले क्यों नहीं?'' फिर, हम पक्का उत्तर नहीं दे सकते। शायद पहले उसे अवसर ही नहीं मिला। शायद वह इसे अधिक से अधिक प्रभावशाली बनाने की प्रतीक्षा में हो। [40]''प्रेरितों के काम, भाग-4'' के पृष्ठ 11 पर सिसेरो द्वारा दिया गया उद्धरण देखिए।

[41]पौलुस और थेलका के अप्रमाणिक कामों (apocryphal Acts of Paul and Thelca) के अनुसार, पौलुस ''गंजा, घुटने पर मुड़ी हुई टांगों वाला, गठीले बदन वाला, छोटे कद का आदमी था। जिसकी भौहें जुड़ी हुई और नाक चौड़ी थी।'' डब्ल्यू. एम. रामसे के अनुसार, ''इस प्रेरित का स्पष्टवादी व्यक्तिगत चित्रण किसी प्रारम्भिक परम्परा को व्यक्त करता है।'' [42]''तीन बार हारे हुए'' किसी व्यक्ति के तीसरे जघन्य अपराध पर दोषी ठहरने के लिए एक अमेरिकी अभिव्यक्ति है। तीसरी बार आरोपी ठहरने से और भी कठोर दण्ड मिलता है। [43]निश्चय ही, उसकी बातों से हैरानी हुई होगी। [44]कानूनी तौर पर, रोमी नागरिकता रोम (या रोमी बस्ती) या सरकार द्वारा विशेष सेवाओं के लिए ही मिलती थी। यह कानूनी तौर पर अधिकारियों को घूस देकर ली जा सकती थी। पलटन के कमांडर ने स्पष्टत: ऐसा ही किया था। पलटन के कमांडर का पहला नाम क्लौदियुस था (23:26)। और स्वतन्त्रता दिलाने वाले का नाम लेने की प्रथा थी, इसलिए बहुत से लोग मान लेते हैं कि पलटन के कमांडर ने उस समय नागरिकता प्राप्त की जब क्लौदियुस वहां सम्राट था (41-54 ई.)। क्लौदियुस के समय इस प्रकार की घूसखोरी लज्जाजनक आयाम तक पहुंच गई थी। [45]प्रेरितों के काम में यह दूसरी बार है कि पौलुस ने रोमी नागरिक होने के अपने अधिकारों पर ज़ोर दिया (पहली बार के लिए, देखिए 16:37)। तीसरी बार हम 25:11 में देखेंगे। जितनी भी बार पौलुस ने ऐसा किया, उसमें उसका अपना व्यक्तिगत लाभ नहीं बल्कि मसीह के उद्देश्य को लाभ पहुंचाने के लिए था (''प्रेरितों के काम, भाग-4'' के पाठ ''परमेश्वर की सहायता से बदलते जीवन'' में नोट्स देखिए)। प्रेरितों 22 में पौलुस ने अपनी नागरिकता का ऐलान इसलिए किया क्योंकि उसकी मृत्यु से प्रभु के कार्य में सहायता नहीं बल्कि रुकावट पड़नी थी। पौलुस कोई परपीड़न-कामुक नहीं था; उसने किसी ''शहीद कॉम्पलैक्स'' पर लंगर नहीं डाला। यदि प्रभु की इच्छा थी तो वह मरने के लिए तैयार था (प्रेरितों 21:13; फिलिप्पियों

1:21, 23), परन्तु वह अपने जीवन को अनावश्यक रूप से ही गंवाने का इच्छुक नहीं था। [46]इसका विकल्प यह होगा कि दोनों में से किसी एक ने घूस देकर नागरिकता पाई थी जो एक पक्के फरीसी के लिए गैर कानूनी काम था। [47]फिर हम इस प्रश्न से उलझते हैं कि उन्होंने पौलुस की बात को क्यों मान लिया। क्या पौलुस ने अपने साथ नये नियम के तुल्य कोई परिचय पत्र, जन्म प्रमाण पत्र आदि रखा था? फिलिप्पी में पौलुस की पिटाई के सम्बन्ध में इस प्रश्न पर ''प्रेरितों के काम, भाग-4'' के पाठ ''परमेश्वर की सहायता से बदलते जीवन'' में नोट्स देखिए। परन्तु यह सुझाव दिया गया है कि यरूशलेम की परिस्थिति फिलिप्पी से भिन्न थी। पौलुस ने अपनी नागरिकता का प्रमाण नगर में कहीं और रखा होगा। पलटन के कमांडर के कब्जे में पौलुस इतनी देर तक था कि यदि वह चाहता तो उसे जांच-पड़ताल के लिए तरसुस में भेज सकता था। [48]सिसेरो ने कहा कि किसी रोमी नागरिक को बांधना दुष्कर्म था। परन्तु बाद में पौलुस को रोम में ही दो वर्षों तक बेड़ियों से बांधे रखा (28:20)। शायद पलटन के कमांडर का भय यह नहीं था कि गिरफ्तार करके पौलुस को बेड़ियों से बांधा गया था, बल्कि यह था कि पौलुस को कोड़े मारने के लिए तस्मों से बांधा गया था (22:24)। [49]स्पष्टत:, उसने कभी भी स्वयं पौलुस से नहीं पूछा। शायद वह यह मानता था कि कोई आरोपी व्यक्ति तब तक पूरी सच्चाई नहीं उगलेगा जब तक पहले उसकी पिटाई न हो। [50]इनको सुनने वालों की आवश्यकता के अनुसार दोहराया जा सकता है।